इण्डियन
थिऑसफिस्ट

अगस्त 2025 | खण्ड 123 | अंक 8

विषयवस्तु

एक कदम आगे 5—6
प्रदीप एच. गोहिल

देवलोकीय पुरुष— आदम—कदमॉन 7—19
यू.एस. पांडे

थिऑसफी — थिऑसफिकल सोसाइटी — थिऑसफिकल मूल्य 20—24
शिखर अग्निहोत्री

समाचार और टिप्पणियां 25—34

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म—विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच. गोहिल

आगे का एक कदम

चेतना स्वयं अनिवार्य रूप से एक प्रक्रिया नहीं पाई जाती यद्यपि मन में यह एक प्रक्रिया प्रतीत होती है – बल्कि यह स्वयंभू सत्ता का मूल स्वरूप है। वस्तुओं या सत्ता का स्व केवल आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही जाना जा सकता है – दर्शन की एक शाखा जो उस वास्तविकता से परे की चीजों से संबंधित है जिसे हम जानते और देखते हैं – आवश्यक रूप से बौद्धिक ज्ञान द्वारा नहीं। आत्म–ज्ञान के दो अविभाज्य पहलू हैं – एक मनोवैज्ञानिक ज्ञान जो अस्तित्व की प्रक्रिया का और दूसरा पराभौतिक ज्ञान उसके सिद्धांतों और अनिवार्यता का।

चेतना, अपने सबसे मौलिक अर्थ में, वह शक्ति है जो हमें संसार का अनुभव करने और उसके साथ अंतःक्रिया करने की अनुमति देती है। यह हमारी व्यक्तिपरक वास्तविकता का कर्ता ''यह कैसा है'' है, वह लेंस जिसके माध्यम से हम अपने सभी अनुभवों को देखते और व्याख्या करते हैं। सत्ता की यह शक्ति केवल भौतिक प्रक्रियाओं का उपोत्पाद नहीं है, बल्कि अस्तित्व का एक मूलभूत पहलू है, जो संभावित रूप से वास्तविकता की संरचना को भावित करता है। यदि चेतना मूलभूत है, जो यह सुझाव देता है कि ब्रह्मांड इस तरह से व्यवस्थित या संरचित हो सकता है जिससे चेतन अनुभव संभव हो सके। यह मानव चेतना के त्रिविध परिवर्तन की धारणा है। इसके मूल में उपनिषदों की दार्शनिक परंपरा को एक सार्थक जीवन–पुष्टि दर्शन के प्रिज्म से एक अनूठा रूपांतरण करना निहित है।

जैसे–जैसे कोई व्यक्ति मानसिक, आध्यात्मिक और चेतना की एक ऐसी अवस्था का मानचित्रण करता है जो सामान्य मन से परे है, जिसकी विशेषता प्रत्यक्ष ज्ञान, देवलोकीय शक्ति और संसार के साथ एक परिवर्तित संबंध है, यह विचार उस दार्शनिक प्रतिमान का प्रतिरूप बन जाता है कि समस्त अस्तित्व, और इस प्रकार चेतना भी, एक भ्रम, माया है।

यह जीवन अपने आप में अद्वितीय है, क्योंकि यह हमें देवलोकीय चेतना को समझने, खुलने और उसके साथ स्वयं को पुनः जोड़ने का अवसर देता है। साधक को इस चेतना के अवतरण के लिए एक उपयुक्त साधन और भौतिक माध्यम बनने के लिए अपनी प्रकृति पर काम करना होगा। देवलोकीय अतिमानसिक चेतना के हमारे भौतिक शरीर में अवतरण की अवधारणा इस

विचार को एक अद्वितीय विकासवादी बल देती है जो शीघ्र ही होगा, क्योंकि प्रकृति हमें केवल भौतिक आयाम और जीवन के स्वरूप से परे जाने के लिए मजबूर करती है।

चेतना का प्रश्न केवल वास्तविकता को जानने का एक तरीका नहीं था, बल्कि इसे ऐसी चीज के रूप में देखा जा सकता था जो साधक को मानव मन से परे वास्तविकता के एक देवलोकीय या ब्रह्मांडीय आयाम में ले जाती है। मानव चेतना के विकास का मानचित्रण करते समय, हम इस अभूतपूर्व वास्तविकता को उस सार्वभौमिक चेतना के एक आयाम के रूप में देख सकते हैं, और इस चेतना की सभी परतें सुपर माइंड में संश्लेषित होती हैं। इसे एक कदम आगे ले जाकर, सार्वभौमिक चेतना के भौतिक शरीर में अवतरण को विकास के अगले चरण के रूप में देखा जा सकता है।

अरबिंदो कहते हैं, ''चेतना केवल जागरूकता नहीं अपितु 'अस्तित्व की शक्ति' है। हमारी मन की आत्मा का विश्वव्यापी मन से, हमारी जीवन की आत्मा का विश्वव्यापी जीवन से और हमारी शरीर की आत्मा का विश्वव्यापी भौतिक अस्तित्व से, सचेतन रूप से मिलन संभव है''। चेतना या 'चित् शक्ति', प्रकृति के रूपों और प्रक्रियाओं के माध्यम से स्वयं को प्रस्तुत करती है, और पदार्थ में व्याप्त यह आत्मा ही है जो हमें अनुभव के माध्यम से जानने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। उस ब्रह्मांडीय चेतना का आह्वान करना ही प्रत्येक साधक का सच्चा आह्वान है, जो बदले में, विकासवादी आवेग को गति प्रदान करेगा।

मानव चेतना के परिवर्तन के माध्यम से ब्रह्मांडीय चेतना, परम मन, के प्रकट जगत में अवतरण की यह अनूठी धारणा, सावित्री और सत्यवान की काव्यात्मक कहानी के केंद्र में है, अज्ञानता से आध्यात्मिक मुक्ति की कहानी के रूप में। सावित्री ईश्वरीय कृपा के अवतरण का साधन है, जो सत्यवान को वापस लाने के अपने प्रज्वलित, एकनिष्ठ ध्यान के माध्यम से मृत्यु, दुख और अज्ञान पर विजय प्राप्त करती है। यह आध्यात्मिक खोज हमारे अंदर एक नए देवत्व के उद्भव का आधार तैयार करती है, जो नश्वरता से परे है और जो हमारे जीवन में एक आगे का कदम होगा।

———————

यू.एस. पांडे[1]

देवलोकीय मनुष्य– आदम–कदमॉन

दोनों शब्दों का अर्थ 'देवलोकीय मनुष्य' शब्द हर्मेटिक दर्शन से लिया गया है और 'आदम कदमॉन' शब्द कबाला से लिया गया है। एच.पी. ब्लैवैत्स्की के लेखन में, इन दो शब्दों 'देवलोकीय मनुष्य' और 'आदम–कदमॉन' का अधिकांशतः समानार्थी रूप से प्रयोग किया गया है, किन्तु कभी–कभी थोड़े अंतर के साथ अलग–अलग भी।

इन शब्दों के कुछ विवरण–

देवलोकीय मनुष्य के ''दस अंग'' दस सेफिरॉथ हैं; लेकिन पहला देवलोकीय मनुष्य ब्रह्मांड की अव्यक्त आत्मा है, और इसे कभी भी माइक्रोप्रोस्पस – लघु मुख या मुखाकृति, जो पार्थिव तल पर मनुष्य का आदर्श है, में अवक्रमित नहीं किया जाना चाहिए।[1]

''ईश्वर, मोनाड और परमाणु, मनुष्य में आत्मा, मन और शरीर (आत्मा, मनस और स्थूल–शरीर) के अनुरूप हैं।'' अपने सप्तकीय समूह में वे ''देवलोकीय मनुष्य'' हैं; इस प्रकार, पार्थिव मनुष्य देवलोकीय का अंतिम प्रतिबिंब है...'' मोनाड (जीव) परमाणुओं की आत्माएँ हैं, दोनों ही वह संरचना हैं जिसमें चौहान (ध्यानी, देवता) किसी रूप की आवश्यकता होने पर स्वयं को धारण करते हैं''।[2]

''देवलोकीय मनुष्य'' (टेट्राग्रामटन) जो प्रोटोगोनोस है, टिक्कुन, निष्क्रिय देवता से प्रथम–जन्म और उस देवता की छाया का प्रथम प्रकटीकरण वह सार्वभौमिक रूप और विचार है, जो स्वयं ब्रह्मांड के कबाला में प्रकट लोगो, एडम–कदमोन, या चार–अक्षरों वाले प्रतीक को जन्म देता है, जिसे दूसरा लोगो भी कहा जाता है।[3]

''देवलोकीय मनुष्य'' आदम–कदमॉन है – सेफिरोथ का संश्लेषण, जैसे 'मनु स्वयंभू'' प्रजापतियों का संश्लेषण हैं।[4]

देवलोकीय मनुष्य का उल्लेख *'सीक्रट डॉस्ट्रीन'* में मनुष्य की उत्पत्ति के रूप में भी किया गया है। इस संबंध में निम्नलिखित बात प्रासंगिक है–

"अपने विकास के मूल स्वरूप के कारण मनुष्य न तो किसी वानर से, न ही किसी ऐसे पूर्वज से जो दोनों का ही पूर्वज हो, न ही किसी अन्य से उतर सकता है, बल्कि अपनी उत्पत्ति स्वयं से कहीं श्रेष्ठ प्रकार से दर्शाता है। और यह प्रकार "देवलोकीय मनुष्य" है – ध्यानी–चोहान, या तथाकथित पितर।"[5]

विष्णु स्पष्टतः कबालिस्टों के आदम–कदमॉन हैं, क्योंकि आदम लॉगॉस या प्रथम अभिषिक्त हैं, जैसे आदम द्वितीय राजा मसीहा हैं।[6]

यदि हम केवल मनु और कबला दोनों के दर्शन के वास्तविक सार की खोज करें, तो हम पाएंगे कि ''विष्णु, आदम–कदमॉन की तरह, स्वयं ब्रह्मांड की अभिव्यक्ति हैं'; और यह कि उनके अवतार" इस "विशाल समग्र" की अभिव्यक्तियों के ठोस और विविध अवतार मात्र हैं।[7] स्वर्गीय आदम स्फीरोथल वृक्ष, या प्रकृति की सभी शक्तियों और उनके सूचनात्मक दैवीय सार का संश्लेषण है। चित्र में, निचले सेफिरोथ का सातवाँ, सेफिरा मलखूथ – सद्भाव का साम्राज्य – आदर्श स्थूल जगत के चरणों का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका सिर पहले अव्यक्त सिर तक पहुँचता है। यह देवलोकीय आदम नेचुरा नेचुरांस, अमूर्त जगत है, जबकि पृथ्वी का आदम (मानवता) नेचुरा नेचुराटा या भौतिक ब्रह्मांड है। पहला अपने सार्वभौमिक सार में देवता की उपस्थिति है; दूसरा उस सार की बुद्धि का प्रकटीकरण है।[8]

''देवलोकीय मनुष्य'', अर्थात् एडम कदमॉन, जैसा कि कबाला इसे व्यक्त करता है, जिसका अर्थ है कि ''आदर्श प्रकार'' सभी भौतिक रूपों का भंडार है।[9]

एडम काडमॉन, एक कबाली शब्द – जिसे सामान्यतः देवलोकीय मनुष्य, या आदर्श मानवता कहा जाता है – प्रायः तीसरे लोगोस के समतुल्य है; ठीक उसी प्रकार जैसे पिता–माता (आत्मा–पदार्थ) दूसरे लोगोस का प्रतिनिधित्व करते हैं।[10]

''मैं सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान आत्मा हूँ'' और मैं आरंभ और मध्य हूँ, और विद्यमान वस्तुओं का अंत भी हूँ,'' कृष्ण ने भगवद् गीता में अर्जुन से कहा।[11]

''मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, आरंभ और अंत... मैं प्रथम और अंतिम हूँ,'' यीशु ने यूहन्ना से कहा।[12]

भगवद् गीता और बाइबल से ऊपर उद्धृत दो कथनों में, कृष्ण और यीशु स्वयं को स्वर्गीय मनुष्य के रूप में वर्णित कर रहे हैं।

शब्द की उत्पत्ति

---

1. उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड फेडरेशन के अध्यक्ष और भारतीय सेक्शन के राष्ट्रीय व्याख्याता, टी.एस.

प्रत्येक ब्रह्माण्ड विज्ञान में, सृजनात्मक देवता के पीछे और उससे भी ऊँचा, एक श्रेष्ठ देवता, एक योजनाकार, एक वास्तुकार है, जिसका निर्माता केवल कार्यकारी कर्ता है। और उससे भी ऊँचा, ऊपर और चारों ओर, अंदर और बाहर, अज्ञेय और अज्ञात है, जो इन सभी उद्‌गमों का स्रोत और कारण है।

इस प्रकार यह समझना आसान हो जाता है कि 'आदम– आदमी' का उल्लेख चैल्डियन्स के धर्मग्रंथों में क्यों मिलता है, जो निश्चित रूप से मोजाइक ग्रंथों से भी पहले का है। असीरियन में आद पिता है, और अरामी में आद 'एक' है, और आद–आद ''एकमात्र'' है, जबकि असीरियन में अक ''सृष्टिकर्ता'' है। इस प्रकार, कबाला (जोहर) में आदम–कदमॉन अक आदम–कदमॉन बन गया, जिसका अर्थ था, ''देवलोकीय पिता या सृष्टिकर्ता का एक (पुत्र), क्योंकि ''अम'' और ''ऊँ'' शब्दों का अर्थ लगभग प्रत्येक भाषा में देवलोकीय या देवता होता था। इस प्रकार, आदम–कदमॉन और–आदम–आदमी का अर्थ हुआ– ''पिता–माता या देवलोकीय प्रकृति का प्रथम उद्भव'', और शाब्दिक रूप से ''प्रथम देवलोकीय''।[13]

यदि मानवशास्त्र (बाइबल में) वैसे ही प्रारम्भ हुआ होता जैसा कि होना चाहिए था, तो इसमें सबसे पहले आकाशीय लॉगॉस, ''स्वर्गीय मनुष्य'' पाया जाता, जो लॉगॉई की एक संयुक्त इकाई के रूप में विकसित होता है, जिसमें से उनकी प्रलय निद्रा के बाद – एक निद्रा जो मायावी धरातल पर बिखरे हुए शून्य को एक में समेट लेती है, जैसे एक प्लेट पर पारा के अलग–अलग गोले एक द्रव्यमान में मिल जाते हैं – लॉगॉई अपनी समग्रता में पहले ''पुरुष और स्त्री'' या आदम–कदमॉन, बाइबल के ''फिएट लक्स'' के रूप में प्रकट होते हैं... लेकिन यह परिवर्तन हमारी पृथ्वी पर नहीं, न ही किसी भौतिक धरातल पर हुआ, बल्कि शाश्वत मूल–पदार्थ के पहले विभेदन की स्थानिक गहराइयों में हुआ।[14]

केवल जिनेसिस के पहले अध्याय का ''देवलोकीय मनुष्य'', आदम–कदमॉन ही है, जिसे ''परमेश्वर की छवि और समानता में'' बनाया गया है। अध्याय 2 के आदम के बारे में यह नहीं कहा गया है कि वह निषिद्ध फल खाने से पहले न तो उस छवि में बना था और न ही देवलोकीय समानता में। पहला आदम सेफिरोथल होस्ट है; दूसरा आदम नासमझ पहली मानव मूल–जाति है; तीसरा आदम वह जाति है जो अलग हो गई, जिसकी आँखें खुली हैं।[15]

कार्य

निष्कलंक देवलोकीय कुँवारी (या''अविभेदित ब्रह्मांडीय प्रतिरूप, अपनी अनंतता में पदार्थ) का ''पुत्र'' पृथ्वी पर पार्थिव हव्वा – हमारी माँ पृथ्वी

– के पुत्र के रूप में पुनः जन्म लेता है, और समग्र रूप से मानवता बन जाता है – भूत, वर्तमान और भविष्य – क्योंकि यहोवा या योद–हे–वौ – वह उभयलिंगी है, या पुरुष और स्त्री दोनों है। ऊपर, पुत्र संपूर्ण ब्रह्मांड है; नीचे, वह मानवजाति है। त्रय या त्रिकोण पृथ्वी पर टेट्राक्टिस, पवित्र पाइथागोरस संख्या, पूर्ण वर्ग, और एक 6–मुख वाला घन बन जाता है। मैक्रोप्रोसोपस (महान मुख) अब माइक्रोप्रोस्पस (छोटा मुख) है; या, जैसा कि कबालिस्ट कहते हैं, ''प्राचीन काल'', आदम–कदमॉन पर अवतरित होकर, जिसे वह अपने माध्यम के रूप में प्रकट करता है, टेट्राग्रामटन में परिवर्तित हो जाता है। यह अब माया, महाभ्रम की गोद में है, और इसके और वास्तविकता के बीच सूक्ष्म प्रकाश है, जो मनुष्य की सीमित इंद्रियों को धोखा देने वाला है, जब तक कि परमार्थसत्य के माध्यम से ज्ञान बचाव के लिए नहीं आता।[16]

जोहर में कहा गया है कि– ऐन–सोफ, परम अनंत शून्य, एक के रूप का भी उपयोग करता है, प्रकट ''देवलोकीय पुरुष'' (प्रथम कारण), अपने रथ के रूप में (हिब्रू में मर्कबाह; संस्कृत में वाहना) या वाहन के रूप में, जो प्रत्यक्ष जगत में अवतरित होता है और उसके माध्यम से प्रकट होता है। लेकिन कबालीवादी न तो यह स्पष्ट करते हैं कि परम किसी भी वस्तु का उपयोग कैसे कर सकता है, या किसी भी गुण का प्रयोग कैसे कर सकता है क्योंकि, परम होने के नाते, वह गुणों से रहित है; न ही वे यह समझाते हैं कि वास्तव में यह प्रथम कारण (प्लेटो का लॉगॉस), मूल और शाश्वत विचार है, जो आदम–कदमॉन, द्वितीय लोगोस, के माध्यम से प्रकट होता है। संख्याओं की पुस्तक में, यह स्पष्ट किया गया है कि ए एन (या ऐन, एइआर) ही एकमात्र स्वयंभू है, जबकि इसकी ''गहराई'' (ग्नोस्टिक्स का बायथोस या बुथोन, जिसे प्रोपेटर कहा जाता है) मात्र आविधिक है। बाद वाला ब्रह्म है जो ब्रह्म या परब्रह्म से भिन्न है। यह गहराई, प्रकाश का स्रोत, या प्रोपेटर है, जो अव्यक्त लोगो या अमूर्त विचार है, न कि ऐन–सोफ, जिसकी किरण एडम–कदमॉन या प्रकट लोगो (वस्तुनिष्ठ ब्रह्मांड), ''नर और नारी'' का उपयोग एक रथ के रूप में करती है जिसके माध्यम से अभिव्यक्त होता है।[17]

"जब पशु पुरुष का बीज पशु स्त्री की मिट्टी में डाला जाता है, तो वह बीज तब तक अंकुरित नहीं हो सकता जब तक कि वह छह गुना स्वर्गीय पुरुष के पाँच गुणों (तत्वों का द्रव या उनसे निकलने वाला) द्वारा फलित न हो जाए। इसलिए सूक्ष्म जगत को षट्‌कोणीय तारे, स्थूल जगत के अंदर एक पंचकोण के रूप में दर्शाया गया है।"[18] इस उद्धरण में पाँच गुण हैं– 1. लिंग–शरीर (आदर्श

शरीर), 2. प्राण (जीवन–तत्व), 3. काम (इच्छा–तत्व), 4. मनस (मन– तत्व) और 5. बुद्धि (विवेकशील तत्व)।[19]

दोनों में, आदिम पुरुष–स्त्री तत्व, और उनके दस और सात उत्सर्जन – ब्रह्मा – विराज और अदिति–वाच एक ओर, और एलोहिम – यहोवा, या आदम–आदमी (आदम–कदमॉन) और सेफिरा–ईव, दूसरी ओर – अपने प्रजापतियों और सेफिरोथों के साथ, अपनी समग्रता में, सबसे पहले आदर्श मानव, प्रोटोलॉगॉस का प्रतिनिधित्व करते हैं; और केवल अपने द्वितीयक पहलू में ही वे ब्रह्मांडीय शक्तियाँ, और खगोलीय या नक्षत्रीय पिंड बनते हैं। यदि अदिति देवताओं की माता, देव–मातृ हैं, तो ईव सभी जीवित प्राणियों की माता हैं; वे ''देवलोकीय पुरुष'' के अपने स्त्री पहलू में शक्ति या उत्पादक शक्ति हैं, और वे सभी संयुक्त रचयिता हैं।[20]

परब्रह्म को केवल प्रकाशमान बिंदु (लोगोस) के माध्यम से ही जाना जा सकता है, जो परब्रह्म को नहीं, अपितु मात्र मूलप्रकृति को जानता है। इसी प्रकार आदम–कदमॉन केवल शेखिनाह को जानते थे, यद्यपि वह ऐन–सोफ का वाहन था। और, आदम–कदमॉन के रूप में, वह गूढ़ व्याख्या में संख्या दस, सेफिरोथ (स्वयं एक त्रिमूर्ति, या एक में अज्ञेय देवता के तीन गुण) का योग है।

''जब देवलोकीय पुरुष (या लॉगॉस) ने पहली बार शीर्ष (केथर), का रूप धारण किया और स्वयं को सेफिरा के साथ पहचाना, तो उसने उस शीर्श (मुकुट) से सात शानदार ज्योतियाँ प्रस्फुटित कीं,'' जिससे कुल मिलाकर दस हो गए; इसी प्रकार ब्रह्मा–प्रजापति, एक बार जब वह वच से अलग हो गए, फिर भी उसके समान हो गए, तो उन्होंने उस मुकुट से सात ऋषियों, सात मनुओं या प्रजापतियों को प्रस्फुटित किया।[21]

बुद्धि का आत्मा से वही संबंध है, जो आदम–कदमोन, कबालिस्टिक लॉगॉस का ऐन–सोफ से, या मूलप्रकृति का परब्रह्म से है।[22]

माइक्रोप्रोसोपस प्रकट लोगो है, और ऐसे अनेक हैं। सेफिरा, केवल अमूर्त तत्व में, एक गणितीय • (अज्ञात राशि) के रूप में, मुकुट, केथर है। विभेदित प्रकृति के धरातल पर, वह एडम–कदमोन की स्त्री प्रतिरूप है – प्रथम उभयलिंगी। कबाला सिखाता है कि ''फिएट लक्स'' शब्द (उत्पत्ति, अध्याय 1) सेफिरोथ के निर्माण और विकास को संदर्भित करता है, न कि अंधकार के विपरीत प्रकाश को। रब्बी शिमोन कहते हैं– ''हे साथियों, एक उत्सर्जन के रूप में मनुष्य पुरुष और स्त्री दोनों था, एडम–कदमोन वास्तव में, और यही 'प्रकाश हो और वह

प्रकाश था' शब्दों का अर्थ है। और यही द्विगुणित मनुष्य है।''[23]

अब दिव्य पदानुक्रमों में सप्तक विभाजन को ध्यान में रखते हुए, जैसा कि ब्रह्मांडीय और मानवीय संरचना में है, छात्र आसानी से समझ जाएगा कि याह–नूह निम्न ब्रह्मांडीय चतुर्थक के शीर्ष पर है और उसका संश्लेषण है। ऊपरी सेफिरोथल त्रय, जिसका यहोवा–बीना (बुद्धि) बायाँ, स्त्री, कोण है – से चतुर्थक □ निकलता है। उत्तरार्द्ध अपने आप में... अतिरिक्त तीन तत्वों का प्रतीक है, निम्न पार्थिव या प्रकट भौतिक प्रकृति, पदार्थ और हमारी पृथ्वी (सातवाँ है माल्खुथ, ''देवलोकीय मनुष्य की दुल्हन''), इस प्रकार, उच्च त्रय, या केथर, मुकुट के साथ, सेफिरोथल वृक्ष की पूर्ण संख्या – 10, एकता में कुल, या ब्रह्मांड का निर्माण होता है। उच्चतर त्रय के अतिरिक्त, निम्नतर सृजनात्मक सेफिरोथ सात हैं।[24]

अन्य दर्शनशास्त्रों में समतुल्य शब्द

फोहत का ''एक जीवन''से गहरा संबंध है। अज्ञात एक से, अनंत समग्रता, प्रकट एक, या आवधिक, मन्वंतरिक देवता, प्रकट होता है; और यह सार्वभौमिक मन, जो अपने स्रोत–स्रोत से पृथक होकर, पश्चिमी कबालिस्टों का डेमिउर्गोस या सृजनात्मक लोगो और हिंदू धर्म का चतुर्मुख ब्रह्मा है। अपनी समग्रता में, गूढ़ तत्व में प्रकट दिव्य विचार के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह उच्च सृजनात्मक ध्यान–चोहानों के यजमानों का प्रतिनिधित्व करता है। सार्वभौमिक मन के विकास के साथ–साथ, आदि–बुद्ध का गुप्त ज्ञान – एक परम और शाश्वत – अवलोकितेश्वर (या प्रकट ईश्वर) के रूप में प्रकट होता है, जो मिस्रवासियों का ओसिरिस, पारसियों का अहुर–मज्दा, हर्मेटिक दार्शनिकों का स्वर्गस्थ पुरुष, प्लेटोवादियों का लोगो और वेदांतियों का आत्मा है।[25]

''आदि–सनत'', जिसका शाब्दिक अनुवाद है, प्रथम या ''आदिकालीन'' प्राचीन है, यह नाम कबालीवादी ''प्राचीन काल'' और ''पवित्र वृद्ध'' (सेफिरा और आदम–कदमोन) को सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से जोड़ता है, जिन्हें उनके अन्य नामों और उपाधियों के अलावा सनत भी कहा जाता है।[26]

छंद 4, क्रमांक 5 में उल्लेख है– 1. आदि–सनात, संख्या, क्योंकि वह एक है, 2. संसार की वाणी, स्वभावत, संख्याएँ, क्योंकि वह एक और नौ है' 'जिससे दस बनता है, या पूर्ण संख्या जो ''सृष्टिकर्ता'' पर लागू होती है, एकेश्वरवादियों द्वारा एक में मिश्रित सभी सृष्टिकर्ताओं को दिया गया नाम, ''एलोहिम'', आदम–कदमॉन या सेफिरा – मुकुट – दस सेफिरोथ के उभयलिंगी संश्लेषण हैं, जो प्रचलित कबाला में प्रकट ब्रह्मांड के प्रतीक हैं।[27]

कान–यिन–तिएन का अर्थ है ''ध्वनि का मधुर स्वर्ग'', कुआन–यिन का निवास, या शाब्दिक रूप से ''दिव्य वाणी''। यह ''वाणी'' क्रिया या शब्द का पर्याय है– ''वाणी'', जो विचार की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार, हिब्रू बाथ–कोल, ''दिव्य वाणी की पुत्री'', या वर्बम, या पुरुष और स्त्री लोगो, ''दमवलोकीय पुरुष'' या आदम–कदमोन, जो एक ही समय में सेफिरा भी है, के साथ संबंध और यहाँ तक कि उत्पत्ति का पता लगाया जा सकता है।[28]

सेफिरोथल वृक्ष ब्रह्मांड है, और आदम–कदमॉन पश्चिम में इसका प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे ब्रह्मा भारत में इसका प्रतिनिधित्व करते हैं।[29]

लॉगॉस हमारे लिए उतना ही अज्ञात है जितना कि परब्रह्म वास्तव में लॉगॉस के लिए अज्ञात है। पूर्वी गूढ़वाद और कबाला दोनों ने – लॉगॉस को हमारी अवधारणाओं के दायरे में लाने के लिए – अमूर्त संश्लेषण को ठोस छवियों में बदल दिया है; अर्थात, उस लोगो या अवलोकितेश्वर के प्रतिबिंबों या बहुगुणित पहलुओं में, ब्रह्मा, अहोरमाज्दा, ओसिरिस, एडम–कदमॉन, इसे इनमें से किसी भी नाम से पुकारें – कौन से पहलू या मन्वंतरिक उत्सर्जन ध्यानी चोहान, एलोहिम, देव, अम्शास्पेंड आदि हैं।[30]

कबाला में, सेफिरा शेखिनाह के समान है, और एक अन्य संश्लेषण में, ''देवलोकीय पुरुष'', एडम–कदमोन की पत्नी, पुत्री और माँ है, और यहाँ तक कि उनके समान भी है, जैसे वाणी ब्रह्मा के समान है, और उसे स्त्री लोगो कहा जाता है।[31]

चीन में फोही (या ''देवलोकीय पुरुष'') के पुरुषों को बारह तिएन–हुआंग, ध्यानियों या देवदूतों के बारह पदानुक्रम, मानव चेहरों और ड्रैगन शरीरों के साथ कहा जाता है; ड्रैगन दिव्य बुद्धि या आत्मा का प्रतीक है; और वे स्वयं को मिट्टी की सात आकृतियों – पृथ्वी और जल – में अवतरित करके मनुष्यों का निर्माण करते हैं – जो उन तिएन–हुआंग के आकार में बनी हैं, जो एक तीसरा रूपक है।[32]

सबसे पहले ''सार्वभौमिक मन'', जिसे ईसाई अनुवादक ने पहले के अनुवादों में ईश्वर, पिता में रूपांतरित किया है; फिर ''देवलोकीय मनुष्य'', जो स्वर्गदूतों के उस समूह का महान योग है, जो निम्न लोकों या हमारे ग्रह के मनुष्यों के निर्माण के लिए बहुत शुद्ध था, लेकिन फिर भी उसी विकास के कारण, ''पिता'' के दूसरे लोगो के रूप में, पदार्थ में समा गया।[33]

क्रूस पर चढ़ाया गया टाइटन (प्रोमेथियस बाउंड में) सामूहिक लोगो,

''समूह'' और ''ज्ञान के स्वामी'' या देवलोकीय मनुष्य का मानवीकृत प्रतीक है, जिसने मानवता में अवतार लिया। इसके अतिरिक्त, जैसा कि उनके नाम प्रो–मी–थियस, जिसका अर्थ है ''वह जो अपने सामने देखता है'' या भविष्य, से पता चलता है – उन्होंने जिन कलाओं का आविष्कार किया और मानवता को सिखाया, उनमें मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि बिल्कुल नहीं थी।[34]

एक देवता, एक सत्ता, जिसका ''मन मनुष्य जैसा हो, केवल असीम रूप से अधिक शक्तिशाली हो,'' कोई ऐसा ईश्वर नहीं है जिसके लिए सृष्टि चक्र से परे कोई स्थान हो। उसका शाश्वत ब्रह्मांड की आदर्श अवधारणा से कोई लेना–देना नहीं है। वह, सर्वोत्तम रूप से, रचनात्मक अधीनस्थ शक्तियों में से एक है, जिसकी समग्रता को ''सेफिरोथ'', ''देवलोकीय मनुष्य'' और एडम–कदमोन, प्लेटोवादियों का दूसरा लोगो कहा जाता है।[35]

हिब्रू बाइबिल के याह–नूह या जेहवोह, कथित हमारी पृथ्वी, मनुष्य और उस पर रहने वाले सभी प्राणियों के निर्माता, हैं–

(क) निम्नतम सप्तक, सृजनात्मक एलोहीम – अपने ब्रह्मांडीय रूप में।

(ख) टेट्राग्रामटन या एडम–कदमोन, चार अक्षरों वाला ''देवलोकीय मनुष्य'' – अपने ईश्वरीय और कबालीवादी रूपों में।

(ग) नूह – हिंदू सिष्ट के समान, मानव बीज, जो पृथ्वी के निवासियों के लिए पुराणों में व्यक्त पिछली सृष्टि या मन्वंतर से, या बाइबिल में रूपकात्मक रूप से प्रस्तुत पूर्व–जलप्रलय काल से – अपने ब्रह्मांडीय चरित्र में। किन्तु चाहे वह चतुर्भुज (टेट्राग्रामटन) हो या त्रय, बाइबिल का सृजनात्मक ईश्वर सार्वभौमिक नहीं है, जब तक कि उसे ऐन–सोफ (जैसे ब्रह्मा और परब्रह्म) के साथ मिश्रित न किया जाए, बल्कि एक सप्तक है, जो सार्वभौमिक सप्तक के कई सप्तकों में से एक है।[36] ऋग्वेदिक स्तोत्रों में ''देवलोकीय पुरुष'' को पुरुष कहा गया है, ''वह मनुष्य'', जिससे विराज का जन्म हुआ; और विराज से, (नश्वर) मनुष्य। यह वरुण (जिसे अब देवताओं–ध्यानियों या देवताओं के प्रमुख के रूप में उनकी उदात्त स्थिति से लिया गया है) ही हैं जो सभी प्राकृतिक घटनाओं को नियंत्रित करते हैं, जो ''सूर्य के लिए एक मार्ग बनाते हैं, ताकि वह उनका अनुसरण कर सके''।[37]

ब्रह्मा के सिर से सात ऋषि और सात मन्वंतरों के चौदह मनु उत्पन्न हुए हैं; वे उनके ''मन से उत्पन्न पुत्र'' हैं, और इन्हीं से मानवजाति और उसकी जातियों का विभाजन प्रारम्भ होता है ''देवलोकीय स्वर्गीय पुरुष, ''लॉगॉस'' (प्रकट), जो ब्रह्मा– प्रजापति हैं।[38]

टेट्रामागाटन, जो हिब्रू 'आई एच वी एच' है, वह भी है ''सेफिरोथल

वृक्ष'' – अर्थात, इसमें केथर, मुकुट को छोड़कर सभी सेफिरोथ शामिल हैं – और ''देवलोकीय पुरुष'' (एडम–कदमोन) का संयुक्त शरीर, जिसके अंगों से ब्रह्मांड और उसमें उपस्थित सभी वस्तुयें निकलती हैं।[39]

दो टेट्रागामाटन हैं– मैक्रोप्रोसोपस और माइक्रोप्रोसोपस। पहला पूर्णतः पूर्ण वर्ग है, या वृत्त के भीतर टेट्राक्टिस, दोनों ही अमूर्त अवधारणाएँ हैं, और इसलिए इसे ऐन – अ–अस्तित्व, अर्थात् असीम और पूर्ण सत्ता कहा जाता है। लेकिन जब इसे माइक्रोप्रोसोपस, या ''देवलोकीय मनुष्य'', प्रकट लोगो के रूप में देखा जाता है, तो वह वर्ग में त्रिभुज है – सात गुना घन, न कि चौगुना, या समतल वर्ग।[40]

आध्यात्मिक दृष्टिकोण मनुष्य को एक सूक्ष्म जगत या एक छोटा ब्रह्मांड मानता है जो स्थूल जगत या विशाल ब्रह्मांड से अविभाज्य है, और इसलिए यदि हम मनुष्य का अध्ययन उसे सार्वभौमिक समग्र से अलग करके करते हैं, जिसे विभिन्न रूपों में ''देवलोकीय मनुष्य'', ''आदम–कदमोन'', ''पुरुषोत्तम'', आदि कहा जाता है, तो हम यह समझने में असफल रहेंगे कि वास्तव में मनुष्य क्या है। आध्यात्मिक रूप से, ''मनुष्य रासायनिक भौतिक शक्तियों का एक सहसंबंध है, साथ ही आध्यात्मिक शक्तियों का एक सहसंबंध भी है।''[41]

ये सभी कारक जो मिलकर एक मनुष्य का निर्माण करते हैं, एक जीवन के पहलू मात्र हैं। महान स्वयंसिद्ध सत्य यह है कि ''एक जीवन'' ही एकमात्र शाश्वत और जीवंत वास्तविकता है, जिसे हिंदू परमात्मा और परब्रह्म कहते हैं।[42]

दिव्य माता–पिता के पुत्र में परस्पर विरोधी शक्तियों का मिलाप है। वह दिव्य पुरुष हैं, हर्मेटिक उभयलिंगी, प्रज्ञा और करुणा का संयोजन अवलोकितेश्वर, क्रिस्टोस, दयालु, कृपालु, व्यवस्था के पालनकर्ता विष्णु, आदम, कदमोन, दिव्य पुरुष के कबाली प्रतीक के रूप में।[43]

भगवद् गीता में, कृष्ण के विश्वरूप (विश्व–रूप) के दर्शन के बाद, अर्जुन उसका वर्णन इस प्रकार करते हैं; ''देवताओं में प्रथम, अति प्राचीन पुरुष, आप परम पात्र हैं सभी जीवित प्राणियों के; ज्ञाता और ज्ञेय, उच्चतर निवासस्थान; आपके विशाल रूप में ब्रह्मांड व्याप्त है (अध्याय 11, श्लोक 38)।'' गीता में यह वर्णन दिव्य पुरुष के समान है।

इस प्रकार, लॉगॉस, पुरुषोत्तम, ब्रह्मा, अवलोकितेश्वर, विष्णु, अहोरमाज्दा, ओसिरिस, विश्वात्मा, क्रिस्टोस आदि शब्द आदम–कदमोन या

दिव्य पुरुष आदि के पर्यायवाची हैं, – जिनके पहलू या मन्वंतरिक उत्सर्जन ध्यानी चोहान, एलोहिम, देव, अंशस्पेंड आदि के समूह हैं।

विकास में उद्देश्य या लक्ष्य

पृथ्वी पर प्रत्येक रूप और अंतरिक्ष में प्रत्येक कण (परमाणु), आत्म–निर्माण के अपने प्रयासों में 'स्वर्गीय मनुष्य' में उसके लिए रखे गए मॉडल का अनुसरण करने का प्रयास करता है।...इसका (परमाणु) का, विकास इसकी बाह्य और आंतरिक वृद्धि और विकास, सभी का एक ही उद्देश्य है – मनुष्य; इस पृथ्वी पर सर्वोच्च भौतिक और परम रूप के रूप में; मोनाड अपनी पूर्ण समग्रता और जागृत अवस्था में – पृथ्वी पर दिव्य अवतारों की परिणति के रूप में।[44]

गुप्त सिद्धांत सिखाता है कि जब मोनाड चक्राकार रूप से पदार्थ में नीचे की ओर जा रहा होता है, तब ये एलोहिम – या पितर, निम्न ध्यानी–चोहान – उसके साथ एक उच्चतर और अधिक आध्यात्मिक स्तर पर समान रूप से विकसित हो रहे होते हैं, और अपनी चेतना के स्तर पर, अपेक्षाकृत रूप से पदार्थ में भी उतर रहे होते हैं, जब एक निश्चित बिंदु पर पहुँचने के बाद, वे अवतारी अर्थहीन मोनाड से मिलेंगे, जो निम्नतम पदार्थ में समाया हुआ है, और दो शक्तियों, आत्मा और पदार्थ, का सम्मिश्रण करते हुए, यह मिलन अंतरिक्ष में ''देवलोकीय मनुष्य'' के उस पार्थिव प्रतीक को उत्पन्न करेगा – पूर्ण मनुष्य।[45]

जैसे लोगोस दिव्य मन में ब्रह्मांड को प्रतिबिंबित करता है, और प्रकट ब्रह्मांड अपने प्रत्येक मोनाड में स्वयं को प्रतिबिंबित करता है, जैसा कि लाइबनिज ने कहा था, एक पूर्वी शिक्षा को दोहराते हुए, उसी प्रकार मोनाड को, अपने अवतारों के चक्र के दौरान, प्रत्येक राज्य के प्रत्येक मूल रूप को स्वयं में प्रतिबिंबित करना होता है। इसलिए, कबालिस्ट सही कहते हैं कि ''मनुष्य'' एक पत्थर, एक पौधा, एक जानवर, एक मनुष्य, एक आत्मा और अंततः ईश्वर बन जाता है, इस प्रकार वह अपना चक्र या परिक्रमा पूरी करता है और उस बिंदु पर लौट आता है जहाँ से वह देवलोकीय मनुष्य के रूप में प्रारम्भ हुआ था।[46]

''लॉगॉस स्वर्ग में निष्क्रिय ज्ञान और पृथ्वी पर चेतन, स्व– सक्रिय ज्ञान है,'' हमें सिखाया जाता है। यह ''स्वर्गस्थ'' का विवाह है मनुष्य'' का ''विश्व की कुँवारी'' – प्रकृति के साथ, जैसा कि पोइमांड्रेस में वर्णित है; जिसका परिणाम उनकी संतान – अमर मनुष्य है।[47]

मनुष्य स्वयं स्वर्गस्थ मनुष्य का दर्जा प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है – जो ग्रहीय मन्वंतर के पूर्ण होने पर मानव साम्राज्य द्वारा प्राप्त की जा सकने वाली स्थिति की परिणति का प्रतिनिधित्व करता है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि मानव विकास का वर्तमान चरण लक्ष्य प्राप्ति से बहुत दूर है। जब मानव राज्य प्राप्त होता है, तो आवश्यकता के चक्र की यात्रा में एक नया कारक प्रवेश करता है। अब प्राकृतिक आवेग के माध्यम से प्रगति जारी नहीं रहती। इसके स्थान पर, मोनैड स्व–प्रेरित और स्व–निर्मित प्रयासों द्वारा अपनी चढ़ाई जारी रख सकता है। वैयक्तिकता अर्जित कर ली गई है। इसके बाद विकासवादी सीढ़ी पर तेजी से प्रगति की जा सकती है, सिवाय एक बाधा के जिसका उल्लेख तीसरे मूल प्रस्ताव में ''कर्म द्वारा रोका गया'' के रूप में किया गया है। इसका अर्थ है, निश्चित रूप से, कि किसी व्यक्ति की प्रगति उस व्यक्ति द्वारा स्वयं किए गए कार्यों के माध्यम से बाधित होती है। ...इसलिए, प्रत्येक मनुष्य के पास अपने भाग्य को आकार देने की शक्ति है, चाहे वह विचार से हो या कर्म से। लक्ष्य तब प्राप्त होता है जब मोनाड की जागृत अवस्था प्राप्त हो जाती है। यह प्राप्ति बुद्ध की स्थिति का प्रतीक है।[48]

निष्कर्ष

स्वर्गस्थ मनुष्य की अवधारणा, न केवल इसे उस स्रोत के रूप में इंगित करती है जहाँ से मनुष्य या मानव समुच्चय प्रकट ब्रह्मांड में अवतरित हुआ है अपितु उस आदर्श या लक्ष्य के रूप में भी जिसकी ओर उसे बढ़ना है, और जिसके लिए मनुष्य को निरंतर प्रयास करना है। मनुष्य को अन्य प्राणियों को भी स्वर्गीय मनुष्य के उस लक्ष्य तक पहुँचने में सहायता करनी है।

सीक्रेट डाक्ट्रीन सिखाती है, ''मनुष्य को चक्रीय कार्य में प्रकृति के साथ अपनी सर्वोत्तम क्षमता से सहयोगी बनकर, विचारों के दिव्य विकास में सहायता करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए''।[49] ''आदर्श रूपों'' को संदर्भित करते हैं जो शाश्वत विचार के हृदय में दबे हुए हैं, जैसे कि भविष्य के कमल के पत्ते, बेदाग पंखुड़ियाँ, उस पौधे के बीज के भीतर छिपी हुई हैं। आदर्श स्वर्गस्थ मनुष्य, स्वर्गीय आदम, जिसकी दिव्य पूर्णता की छवि में पार्थिव मनुष्य, पार्थिव आदम, प्रतिरूपित है, और स्वर्गीय मनुष्य का अन्तिम प्रतिबिंब है। मनुष्य को पृथ्वी पर शरीर में रहते हुए अपने सच्चे स्व और स्वभाव की सहज दिव्य पूर्णता को प्रकट करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए ब्रह्मांडीय और कर्म नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए, जो सांसारिक प्रकारों को उनके दिव्य आदर्शों की पूर्णता तक उठाने की प्रवृत्ति रखते हैं; दूसरे शब्दों में, प्रकृति के साथ

एक सहकर्मी बनना उसके पूर्ण मनुष्य के विकास के चक्रीय कार्य में।

राजयोग जैसे गहन दर्शनशास्त्र की शिक्षाओं का ईमानदारी से अभ्यास ही वह साधन है जिसके द्वारा जीवन जीते हुए, मनुष्य इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ–

1. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, टी.पी.एच., अड्यार, मद्रास, 1978, पृष्ठ 215
2. वही, पृष्ठ 619
3. एच.पी. ब्लैवैत्सकी, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–2, टी.पी.एच., अड्यार, मद्रास, 1979, पृष्ठ 25
4. वही, फुटनोट, पृष्ठ 704
5. वही, पृष्ठ 683
6. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, आइसिस अनवील्ड, खंड–2, थिऑसफिकल यूनिवर्सिटी प्रेस, पैसाडेना, कैलिफोर्निया, 1976, पृष्ठ 259
7. वही, पृष्ठ 277
8. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, थिऑसफिकल शब्दावली, थिऑसफी कंपनी (मैसूर) प्राइवेट लिमिटेड, बैंगलोर, 178, पृष्ठ 138
(मूल संस्करण का एक फोटोग्राफिक पुनरुत्पादन, जैसा कि पहली बार जारी किया गया लंदन, इंग्लैंड, 1892 में)
9. जेफ्री ए. बारबोर्का, द डिवाइन प्लान, टी.पी.एच., अड्यार, मद्रास, 1961, पृष्ठ 352
10. वही, पृष्ठ 505–506
11. भगवद् गीता (अध्याय 10, क्रमांक 20)
12. जॉन (समीक्षा 1,8,17)
13. एच.पी. ब्लावात्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–2, पूर्व संदर्भित, पृष्ठ 43 और जेफ्री बारबोर्का, द डिवाइन प्लान, पूर्व संदर्भित, पृष्ठ 506
14. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, टी.पी.एच., पृष्ठ 246
15. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–2, फुटनोट, पृष्ठ 46
16. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, पृष्ठ 60
17. वही, पृष्ठ 214
18. वही, पृष्ठ 224
19. जेफ्री ए. बारबोर्का, द डिवाइन प्लान, पृष्ठ 89
20. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, पृष्ठ 355–56

21. वही, पृष्ठ 432–33
22. वही, पृष्ठ 179
23. वही, फुटनोट, पृष्ठ 215–16
24. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–2, पृष्ठ 595
25. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, पृष्ठ 110
26. वही, पृष्ठ 98
27. वही, फुटनोट, पृष्ठ 98
28. वही, पृष्ठ 137
29. वही, पृष्ठ 352, और जेफ्री ए. बारबोर्का, द डिवाइन प्लान, पृष्ठ 50
30. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, पृष्ठ 429
31. वही, पृष्ठ 430
32. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–2, पृष्ठ 26–27
33. वही, पृष्ठ 236
34. वही, पृष्ठ 413
35. वही, पृष्ठ 544
36. वही, पृष्ठ 596
37. वही, पृष्ठ 606
38. वही, पृष्ठ 624
39. वही, फुटनोट, पृष्ठ 625
40. वही, पृष्ठ 626
41. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, आइसिस अनवील्ड, खंड–1, थियोसोफिकल यूनिवर्सिटी प्रेस, पैसाडेना, कैलिफोर्निया, 1976, पृष्ठ 309
42. थिऑसफिकल मूवमेंट, नवंबर, 2022, पृष्ठ 18
43. सिस्ट. कृष्ण प्रेम और श्री माधव आशीष, मनुष्य सभी वस्तुओं का मापक , टी.पी.एच., अड्यार, मद्रास, 1966, पृष्ठ 269
44. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, टी.पी.एच., पृष्ठ 183
45. वही, पृष्ठ 247
46. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खण्ड–1, पृष्ठ 186
47. वही, पृष्ठ 231
48. जेफ्री ए. बारबोर्का, द डिवाइन प्लान, पृष्ठ 110
49. एच.पी. ब्लैवैत्स्की, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड–1, टी.पी.एच., पृष्ठ 280

——————————————

शिखर अग्निहोत्री[2]

थिऑसफी – थिऑसफिकल सोसाइटी – थिऑसफिकल मूल्य[3]

मुझे 'थिऑसफी – टीएस – थिऑसफिकल मूल्यों' के बारे में बात करने की सलाह दी गई है और हम सभी जानते हैं कि थिऑसफी को उसकी असीम–शाश्वत प्रकृति के कारण परिभाषित नहीं किया गया है और शायद इसीलिए हर बार जब मैं इस पर बोलता हूँ, तो कुछ अलग ही बात सामने आती है। थिऑसफी शब्द लगभग दो हजार साल पुराना है और यह अलेक्जेंड्रिया के दार्शनिकों से आया है जिन्हें फिलालेथियन (सत्य के प्रेमी) कहा जाता था और उनमें से एक थे अमोनियस सैकाज जिन्होंने पहली बार थिऑसफी शब्द का प्रयोग तीसरी शताब्दी में किया था जब उन्होंने इक्लेक्टिक थिऑसफिकल प्रणाली बनाई थी, और संयोग से नहीं, जिसका उद्देश्य आज हमारे पास वर्तमान टीएस के उद्देश्य से अलग नहीं था, यानी सभी धर्मों, संप्रदायों, राष्ट्रों को प्रकृति के सार्वभौमिक शाश्वत नियमों पर आधारित एक समान नैतिक प्रणाली के अंतर्गत समेटना।

अब, प्रायः थियोसॉफी शब्द का अनुवाद 'ईश्वर की बुद्धि' के रूप में किया जाता है क्योंकि थियोस–दिव्य, सोफिया–बुद्धि; इसलिए, देवताओं के पास 'ईश्वर की बुद्धि' नहीं, बल्कि 'दिव्य बुद्धि' होती है और ये 'देवता' कौन हैं और उनका हम मनुष्यों से क्या संबंध है। न केवल थियोसॉफी, बल्कि कई भारतीय धर्मग्रंथ स्पष्ट करते हैं कि प्रकट जगत में ये देवता वे हैं जो मानव विकास से बहुत पहले गुजर चुके हैं, जिन्हें हम सिद्ध, गुरु, अवतार, द्रष्टा, ऋषि आदि के रूप में भी जानते हैं, न कि कोई अलौकिक या विशेष रचना जिसे ईश्वर के रूप में जाना जाता है। और इसलिए, थियोसॉफी, जैसा कि हम इसे समझते हैं, मानवता के इन महान शिक्षकों के युगों और पीढ़ियों का संचित ज्ञान है।

और इसलिए, हम कह सकते हैं कि थियोसोफी ज्ञान या बुद्धिमत्ता का भंडार है जो अनुभवों पर आधारित है और जो स्वयं को ईश्वर या दिव्यता की चिंगारी के रूप में अनुभव करने के मार्ग पर प्रकाश डालती है। थियोसोफी यह

1. टीएस के अंतर्राष्ट्रीय वक्ता और भारतीय अनुभाग के राष्ट्रीय वक्ता, टीएस।
3. 10 अगस्त 2024 को त्रिची में तमिल थियोसोफिकल फेडरेशन द्वारा आयोजित अध्ययन शिविर में दिया गया व्याख्यान।

मौन की वह आवाज है जो जीवन की एकता की प्राप्ति के इस पथ पर उठाए जाने वाले अगले कदम की फुसफुसाहट देती है। संस्कृत में इसे ब्रह्मविद्या कहा जाता है जिसका अर्थ समान है, वह विद्या जो ब्रह्म की ओर ले जाती है। लेकिन केवल तभी जब इसे जीवन में लागू किया जाए।

किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि थिऑसफी केवल दो हजार साल पहले से ही अस्तित्व में है। थियोसोफी तब से अस्तित्व में है जब से इसकी अभिव्यक्ति प्रारम्भ हुई और मानवता के महान शिक्षकों ने, चाहे इस ग्रह से हों या अन्य ग्रहों से, उन शिक्षाओं और सिद्धांतों को मानवता के सामूहिक मन में स्थापित करके विकास का मार्गदर्शन किया। और यह चक्रीय रूप से बार–बार चलता रहा है। यही चक्रीय नियम भगवान कृष्ण द्वारा भी व्यक्त किया गया है जब वे भगवद् गीता में कहते हैं–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानम्–अधर्मस्य तदात्मनं सृजाम्यहम्!

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे!"

जब भी धर्म का ह्रास होता है और अधर्म बढ़ता है, कृष्ण कहते हैं कि मैं धर्म और अच्छे लोगों की रक्षा के लिए जन्म लेता हूँ। लेकिन इस श्लोक का एक बाह्य और एक आंतरिक पहलू है। कर्म के नियम के अंतर्गत उच्चतर शक्तियों द्वारा हमेशा एक व्यक्ति या संगठन के रूप में बाहरी हस्तक्षेप होता है, किन्तु आंतरिक पहलू यह है कि कृष्ण–ईसा–बौद्ध चेतना या बुद्धि हमारे मन में अंधकार और बुराई को दूर करने के लिए जन्म लेती है (यह अलगाव की भावना है) और जब ऐसा होता है तो बाहरी स्वतः रूपांतरित हो जाता है क्योंकि बाहरी आंतरिक का प्रतिबिंब होता है। और यही वह है जिसे थिऑसफी बार–बार हम में प्रेरित करने का प्रयास कर रही है कि हम सब कुछ छोड़ दें और अपने अंदर देखें – जैसा कि लाइट ऑन द पाथ कहती है – 'आपके अंदर संसार का प्रकाश है, एकमात्र प्रकाश जो इस पथ पर डाला जा सकता है, यदि आप इसे अपने अंदर अनुभव नहीं कर पा रहे हैं तो इसे कहीं और खोजना व्यर्थ है – किसी बाहरी उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा न करें और उद्धारकर्ता को अपने अंदर जन्म लेने दें। कृष्ण ने भगवद्गीता में यही कहा है – सभी विभिन्न धर्मों का त्याग करो और केवल मेरे प्रति समर्पण करो या थिऑसफी अपने मुख्य उद्देश्य सार्वभौमिक बंधुत्व के द्वारा यही कह रही है सभी मन–आधारित

भेदभावों को दूर करके बौद्ध चेतना की शरण में जाना। इसलिए, समय–समय पर ऐसे प्रयास किए जाते हैं जिनसे मानव चेतना का सामूहिक उत्थान हो और उन लोगों को प्रोत्साहन मिले जो इस ज्ञान को प्राप्त करने और इस मार्ग पर तेजी से प्रगति करने के लिए तैयार हैं। इसी तर्ज पर, टीएस की स्थापना विकास के एक बहुत ही महत्वपूर्ण चरण की अवधि में हुई थी। टीएस की स्थापना मानव विकास के लिए दो सबसे बड़े खतरों का सामना करने के लिए की गई थी, जो 19वीं शताब्दी की अवधि में तेजी से मजबूत होते जा रहे थे – **धर्म में अंधविश्वासों का ह्रास और अभी भी ह्रासकारी क्रूर भौतिकवाद।**

क्योंकि धर्म और अध्यात्म के नाम पर, सभी प्रकार की हिंसा, अंधविश्वास, शोषण, भेदभाव, माध्यमवाद और क्रूरता को उचित ठहराया जाता था और जो लोग इस प्रकार के धर्म से मोहभंग हो गए थे, उनके पास नई खोजों के साथ आधुनिक विज्ञान के उभार के कारण पूरी तरह से भौतिकवादी बनने के अलावा कोई रास्ता नहीं था।

और इसलिए, इस गति को रोकने और मार्ग सुधार करने के लिए, टीएस की स्थापना (थिऑसफी के एक माध्यम के रूप में) उस आध्यात्मिक हस्तक्षेप के एक भाग के रूप में की गई थी जो प्रत्येक शताब्दी के अंतिम चौथाई भाग में उन विकसित व्यक्तियों (सिद्ध संघ) द्वारा किया जाता है – जिनके परिवार से वेद व्यास, कृष्ण, बुद्ध, शंकराचार्य, मैत्रेय, ईसा, गुरु नानक, जे. कृष्णमूर्ति आदि और अनगिनत अन्य अलग–अलग समय में समय की आवश्यकता के अनुसार मानव चेतना को एक नया दृष्टिकोण देने और दिव्य योजना के अनुसार विकास प्रक्रिया में सहायता करने के लिए आए। और हम मानव मानस पर थियोसोफिकल आंदोलन के वैश्विक प्रभाव को देख सकते हैं। हम पूर्णता के कहीं निकट नहीं हैं, किन्तु 19वीं शताब्दी के मानस की तुलना में, जिसमें त्वचा के रंग और व्यक्ति के लिंग के आधार पर भेदभाव और क्रूरताएँ थीं, जब आध्यात्मिकता का अर्थ था मृत व्यक्ति की आत्मा को बुलाना और उससे ज्ञान प्राप्त करना। यद्यपि टीएस पृष्ठभूमि में रहा है, किन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो अनेक सामाजिक–आध्यात्मिक–राजनीतिक सुधार थिऑसफी के दर्शन से प्रेरित रहे हैं। और बिना किसी अतिशयोक्ति के मैं कह सकता हूँ कि टीएस मानवता की भलाई के लिए सभी नए युग के आध्यात्मिक–सामाजिक आंदोलनों की जननी है।

यदि हम ध्यान से देखें, तो सभी थिऑसफिकल साहित्य एक ही दिशा

की ओर इशारा करते हैं और वह है जीवन की एकता को समझना (चाहे वे मूल प्रस्ताव हों या तीन महान सत्य) और यही थिऑसफिकल मूल्यों का स्रोत भी है। क्योंकि मूल्य – नैतिकता – नैतिकताएँ निष्कर्षों – परिणामों के अतिरिक्त और क्या हैं – वे ऐसे कार्यों के लिए सुझाव हैं जो सुख – आंतरिक शांति की ओर ले जाते हैं और दुख से बचते हैं। लेकिन वे स्थानीय धर्म, संस्कृति, परंपरा और भौगोलिक क्षेत्र आदि से प्रभावित हो सकते हैं और इसलिए जगह–जगह अलग–अलग हो सकते हैं। किन्तु जिन मूल्यों की हम बात कर रहे हैं, थिऑसफिकल मूल्य वे हैं जो प्रकृति के नियमों पर आधारित अनुशंसित कार्य हैं जो प्रत्येक स्थान, प्रत्येक युग में और सभी के लिए एक समान रहते हैं। और ये मानवता के महान शिक्षकों की शिक्षाओं पर आधारित हैं। और इसका मूल यह है कि सारा जीवन एक है और हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। और यह अंतर्संबंध अलग–अलग भागों के एक साथ आने जैसा नहीं है, बल्कि यह अंतर्संबंध इस प्रकृति का है कि सतही अंतरों के बावजूद हम मूलतः एक ही हैं। और इसलिए, हम देख सकते हैं कि टीएस का पहला उद्देश्य – सार्वभौमिक बंधुत्व – नस्ल, पंथ, लिंग, जाति, रंग के भेदभाव के बिना – अपनी प्रेरणा कहाँ से लेता है।

जीवन की एकता के इस बोध से ही एक और मूल्य उत्पन्न होता है जिसे थियोसोफी में बहुत महत्व दिया गया है – परोपकारिता – निस्वार्थ सेवा। यह केवल एक क्रिया नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण या जीवन जीने की एक विधि है।

एक ऐसा दृष्टिकोण जिसमें व्यक्ति सदा सभी की मदद करने की विधियां खोजता रहता है। इसके अतिरिक्त, थिऑसफी यह भी सिखाती है कि हम सभी ईश्वर की एक चिनगारी हैं। और इसी सिद्धांत से हमारे दो अत्यंत महत्वपूर्ण मूल्य उत्पन्न होते हैं, जो हैं विचार की स्वतंत्रता और अन्वेषण की भावना पर आधारित आत्मनिर्भरता।

प्रायः हम टीएस की तुलना अन्य संगठनों से करते समय विचार की स्वतंत्रता के इस सिद्धांत को हल्के में ले लेते हैं। लेकिन यही वह वस्तु है जो टीएस को उन संगठनों के बीच अलग खड़ा करती है जो हर रोज दर्जनों की संख्या में उभर रहे हैं। ऐसे संगठन जहाँ स्वाभाविक मानवीय जिज्ञासा का स्थान सत्ता में अंध विश्वास ले लेता है। और इसी तरह, सत्ता के स्थान पर अन्वेषण के पहलू पर आते हुए, जो हमें गुरु के प्रश्न पर लाता है। गुरु कौन है?

गु– छिपा हुआ – अंधकार, प्रकाशित – निवारण। गुरु एक ज्वाला है जो शिष्य में चिंगारी को ज्वाला बनने के लिए प्रेरित करता है।

और क्योंकि वह चिंगारी और ज्वाला दोनों हम सभी के अंदर हैं, इसलिए वास्तविक गुरु का उद्देश्य सभी बैसाखियों को हटाकर शिष्य को आत्मनिर्भर बनाना है और यही थियोसोफी का उद्देश्य रहा है। सत्ता में अंध विश्वास पर नहीं, बल्कि अन्वेषण की भावना पर आधारित आत्मनिर्भरता थियोसोफिकल शिक्षाओं का एक मुख्य तत्व है, जो विचार की स्वतंत्रता के सिद्धांत का भी स्रोत है, जिसका आज भी टीएस में धार्मिक रूप से पालन और संरक्षण किया जाता है। और यही एक कारण है कि लगभग 150 वर्षों के बाद भी, थिऑसफी का स्रोत अभी भी गंभीर और ईमानदार सत्य के साधकों की प्यास बुझा रहा है, जो एक ऐसे संगठन के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति थियोसॉफी का छात्र है और एकमात्र गुरु हम सभी में विद्यमान आत्मा है।

यह कहने के बाद, हमें सदा याद रखना चाहिए कि थिऑसफी और टीएस एक नहीं हैं। एक आत्मा है, दूसरा शरीर। एक शाश्वत है, दूसरा क्षणभंगुर। एक पूर्ण है, दूसरे में सुधार किया जा सकता है।

एचपीबी ने अपनी पुस्तक ''द की टू थियोसॉफी'' में टीएस के भविष्य के बारे में कहा है –

''इसका भविष्य लगभग पूरी तरह से निस्वार्थता, ईमानदारी, समर्पण के स्तर पर निर्भर करेगा, और अंत में, लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, उन सदस्यों के ज्ञान और बुद्धि की मात्रा पर भी, जिन पर संस्थापकों की मृत्यु के बाद इस कार्य को आगे बढ़ाने और समाज का निर्देशन करने की जिम्मेदारी होगी।''

हमारा समाज एक गंभीर, परिश्रमी, आत्म–त्यागी समाज है, और हम केवल ऐसे पुरुषों को चाहते हैं जो पुरुष कहलाने के योग्य हों और हमारे सम्मान के पात्र हों। हम ऐसे पुरुषों को चाहते हैं जिनका पहला प्रश्न यह न हो कि 'मुझे इसमें सम्मिलित होने से क्या लाभ हो सकता है?' बल्कि यह हो कि 'मैं इसमें सम्मिलित होकर क्या लाभ दे सकता हूँ?'

एच.एस. ओलकॉट के विचार

समाचार और टिप्पणियां

बॉम्बे

डॉ. उषा और अरुणभाई चतुर्वेदी ने 23 मई 2025 को ब्लैवैत्स्की लॉज जूम मीटिंग में चर्चा की, जब बहन अबन पटेल पुस्तक 'स्प्रिंग इन ऑटम ऑफ डेथ' के अध्याय 14 का अध्ययन कर रही थीं। यह पुस्तक उच्च स्तर पर ध्यान के माध्यम से अरुणभाई की अपनी प्रिय बेटी स्तुति की आत्मा से मुलाकातों को उजागर करती है, जो केवल 13 वर्ष की आयु में एक दुर्घटना में मारी गई थी, जिन्हें उषाबेन ने मूल रूप से गुजराती पुस्तक 'मृत्यु नी पंखर मन वसंत' में सुंदर भाषा में विद्वानों द्वारा दर्ज किया है। अरुणभाई ने अपने ध्यान की विधि और शीर्षक के चयन से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दिए। अरुणभाई ने कहा कि श्री रोहित मेहता की पुस्तकों और थिऑसफी ने उन्हें अपनी बेटी से उच्च स्तर पर उसकी यात्रा के बारे में जानने में मदद की। बन्धु अर्नी नरेंद्रन को जुलाई 2025 में वैंकूवर, कनाडा में आयोजित होने वाले 12वें टीएस विश्व सम्मेलन में थिऑसफिकल सोसाइटी के इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के अंतरसांस्कृतिक संवाद (पैनल चर्चा) के लिए पैनलिस्ट के रूप में आमंत्रित किया गया है। वे भारत से एशिया का प्रतिनिधित्व करेंगे।

बहन जीना रस्तोमजी ने ब्लैवैत्स्की लॉज में 'आचरण' पर एक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने प्रदर्शन के साथ यह आग्रह किया कि अच्छा आचरण न केवल देखने में आकर्षक होता है, बल्कि जीवन भर स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। सीधी, तनी हुई रीढ़ युवावस्था का सबसे स्वस्थ संकेत है।

बहन दीपा कपूर, रचनात्मक कवि एवं लेखिका, बीटीएफ बुलेटिन के लिए आभार व्यक्त करती हैं– बीटीएफ बुलेटिन न केवल थियोसोफिकल गतिविधियों पर जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत है, बल्कि प्रेरणा का एक प्रकाश स्तंभ भी है। यह एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है जो निकट और दूर के सदस्यों (हमारे कई पूर्वी और मध्य अफ्रीकी सदस्यों सहित) को जोड़ता है और एकता और गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

दिल्ली

बन्धु बी.डी. तेंदुलकर ने 7 जून को ऑनलाइन बैठक में 'काम और प्राण' के बारे में चर्चा की। बन्धु राजीव गुप्ता ने 4 जून को 'आपके मन की

शक्ति' विषय पर व्याख्यान दिया। बन्धु श्याम सिंह गौतम ने 'अदृश्य संसार और शरीर ' 21 जून पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया।

बहन मानसी भगत और डॉ. राजीव गुप्ता ने 28 जून को 'सम्यक ज्ञान का मार्ग' के बारे में चर्चायें कीं।

तमिल

निम्नलिखित लॉजों द्वारा अप्रैल और जून 2025 के बीच नियमित रूप से मासिक बैठकें आयोजित की गईं–

(1) धर्मपुरी, नागरकोइल, पुडुचेरी और कोराडाचेरी।

(2) सथुवाचारी लॉज ने उपरोक्त तीन महीनों में से प्रत्येक में दो बैठकें आयोजित कीं।

(3) राजा लॉज वेल्लोर और लोटस लॉज वेल्लोर ने प्रत्येक बुधवार और रविवार को साप्ताहिक बैठकें आयोजित कीं।

अध्ययन शिविर–

1) नागरकोइल लॉज द्वारा 19–20.4.2025 को कन्याकुमारी में 'थियोसोफी के सिद्धांतों पर आधारित नैतिक जीवन' विषय पर एक अध्ययन शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय व्याख्याता बन्धु प्रदीप महापात्रा मुख्य अतिथि थे और उन्होंने उद्‌घाटन भाषण दिया। फेडरेशन के अध्यक्ष बन्धु आर. कृष्णमूर्ति ने अध्ययन शिविर की अध्यक्षता की।

19.04.2025 को अलापुझा लॉज (केरल) की बहन लक्ष्मी नें और 20.04.2025 को सेलम लॉज की बहन एम. विजयलक्ष्मी नें भारत समाज पूजा का आयोजन किया। शिविर में निम्नलिखित सदस्यों द्वारा संक्षिप्त व्याख्यान दिए गए–

नागरकोइल लॉज के बन्धु के. अपथुकथा पिल्लई के व्याख्यान का विषय था 'कुमारी जिले के गुण और शिवलिंग की पूजा'। नागरकोइल लॉज के बन्धु के. कोलप्पा दास ने "नारायण गुरुदेव' के बारे में बताया; तमिल फेडरेशन के सचिव बन्घु पी. देवराजन ने 'खुशी हमारे हाथों में' के बारे में बताया; पुडुचेरी के बन्धु आर. अरुणाचलम ने 'थियोसोफी के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग – कुछ संकेत' विषय पर चर्चा की' शिवगंगा लॉज के बन्धु वी. थंगमणि ने 'आध्यात्मिक जीवन' के बारे में वार्ता की; नागरकोइल लॉज के बन्धु सी. सुंदरलिंगम का विषय था 'समितोप्पु के स्वामी वैलकुंडार' के अनुसार जीवन जीने की कला; नागरकोइल लॉज की बहन के.एल.एस. गीता ने 'ईसा मसीह

के पुनरुत्थान' के बारे में वार्ता की; मदुरै की बहन भानुमति स्वामीनाथन ने 'थिऑसफिकल लाइफ' के बारे में बताया।

बन्धु के. अपथुकाथा पिल्लई, अध्यक्ष, नागरकोइल लॉज द्वारा दो पुस्तकों– 'कटराथुम, केट्टाथम (मैंनें क्या सुना और क्या सीखा)', और 'अरिया वेन्दुवना, अरिवुरुथुवना (मैं क्या सीखना चाहता हूं)' का इस अवसर पर विमोचन किया गया। 'कलाईमामानी; श्री. एरवाडी. एस.राधाकृष्णन. डॉ. टी. आर.रामनाथन, प्रोपराइटर, वानथी पथिप्पागम, चेन्नई ने कार्यक्रम में भाग लिया और लेखक को सम्मानित किया।

(2) कोयंबटूर में 'थियोसॉफी और पब्लिक' विषय पर एक अध्ययन शिविर 21–22.06.2025 को आयोजित किया गया। बन्धु आर कृष्णमूर्ति, अध्यक्ष, तमिल फेडरेशन. नें दोनों दिन समारोह की अध्यक्षता की। भारत समाज पूजा का संचालन दोनों दिन बहन एम. विजयालक्ष्मी, उपाध्यक्ष, तमिल फेडरेशन. द्वारा किया गया।

परिचयात्मक भाषण बन्धु पी. देवराजन, सचिव तमिल फेडरेशन, द्वारा दिया गया।

शिविर के दौरान सदस्यों द्वारा निम्नलिखित संक्षिप्त व्याख्यान दिए गए–

शिवगंगै लॉज के बन्धु एन. वेलुसामी ने 'अमुथा तमिझ' के बारे में बताया'। मदुरै लॉज के बन्धु के. भास्करन ने 'मन द्वारा सुरक्षा की खोज' पर व्याख्यान दिया; धर्मपुरी के बन्धु एम. गोपालकृष्णन के व्याख्यान का विषय 'आत्म–साक्षात्कार और स्वस्थ जीवन था; धर्मपुरी के बन्धु सी. चंद्रशेखरन ने 'थिऑसफिक और सार्वजनिक' पर व्याख्यान दिया। तिरुचि के बन्धु ए. रामलिंगम ने भी इसी विषय पर चर्चा की। पुडुचेरी के बन्धु आर. अरुणाचलम ने 'ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु ध्यान की तकनीकें' पर चर्चा की; वेल्लूर के राजा लॉज के बन्धु मुनिवेलन ने 'ओसिन ऑफ थिऑसफी' पर व्याख्यान दिया। लोटस लॉज, वेल्लोर के बन्धु एम. नरसिम्हन द्वारा दिए गए व्याख्यान का विषय 'श्री आंडाल' था; और मदुरै के बन्धु के. भास्करन ने 'योग' पर विचार व्यक्त किए।

21.06.2025 को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के उपलक्ष्य में, फेडरेशन सचिव बन्धु पी. देवराजन ने कुछ सरल योगाभ्यासों का प्रदर्शन किया और सभी प्रतिभागियों ने स्वेच्छा से अभ्यास किया।

बैठक में, सेलम की बहन एम. विजयलक्ष्मी और धर्मपुरी के बन्धु सी.

चंद्रशेखरन को जुलाई 2025 में वैंकूवर, कनाडा में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय थियोसोफिकल कांग्रेस में भाग लेने के लिए चुने जाने पर सम्मानित किया गया।

टीओएस गतिविधियाँ– बन्धु पी. देवराजन, फेडरेशन सचिव ने 15 मई को 100 लोगों को भोजन उपलब्ध कराया। यह आयोजन उनके पैतृक स्थान श्री धनदायुथापानी मंदिर, लालीगाम में वैकाशी के पहले दिन की पूर्व संध्या पर 1,500 रुपये की लागत से किया गया।

धर्मपुरी लॉज की बहन देसी धर्मलिंगम ने अप्रैल 2025 से जून 2025 तक प्रत्येक माह में 8 अलग–अलग तिथियों पर सरकारी अस्पताल, धर्मपुरी में परिचारकों और रोगियों को निःशुल्क जलपान दिया, जिस पर 48,000 रुपये खर्च हुए।

भारतीय सेक्शन के टीओएस ने 08.06.2025 को अड्यार में आम सभा और कार्यकारी समिति की बैठक आयोजित की। राष्ट्रीय निदेशक बन्धु के. शिवप्रसाद ने सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें उन्होंने तमिल क्षेत्र की टीओएस गतिविधियों की समीक्षा की और उनकी सराहना की। बैठक में तमिल क्षेत्र के छह सदस्यों ने भाग लिया।

धर्मपुरी लॉज के बन्धु एम. सुब्रमण्यन और उनकी पत्नी बहन एस. मलारविझी ने कंबैनल्लूर के सरकारी बालिका एवं बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की 6 लड़कियों और 6 लड़कों को 1,000/– रुपये का नकद पुरस्कार दिया। यह नकद राशि उन छात्रों को दी गई जिन्होंने 2024–25 में दसवीं और बारहवीं कक्षा के लिए आयोजित सार्वजनिक परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। 12,000/– रुपये का नकद पुरस्कार और 5,000/– रुपये का पुस्तक पुरस्कार। कुल 17,000/– रुपये का दान।

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

बन्धु बी.के. पांडे ने 'ओपन माइंड' पर एक व्याख्यान दिया, जो 4 जून को धर्म लॉज, लखनऊ में आयोजित किया गया था। 18 जून को उनके अन्य व्याख्यान का विषय 'सांस का विज्ञान' था। बन्धु प्रमिल द्विवेदी ने 25 जून को उसी स्थान पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने 'मानवता की सेवा' पर बात की।

बन्धु राजवीर ने 12 जून को निर्वाण लॉज, आगरा में 'योग' के बारे में बताया और 26 जून को भाई एच.बी. पांडे के व्याख्यान का विषय 'नारद भक्ति' था। इसके अतिरिक्त, लॉज द्वारा क्रमशः 5 और 19 जून को थिऑसफी का परिचय' और 'जीवन की पहेलियाँ' विषयों पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं।

बन्धु अरविंद द्वारा दो सत्रों में 'ईथरिक डबल' पर व्याख्यान क्रमशः 4 और 11 जून को सर्वहितकारी लॉज, गोरखपुर में दिए गए। इसके बाद, बन्धु ए. पी. श्रीवास्तव ने 18 जून को 'सांख्य दर्शन' और बन्धु आर.पी. त्रिपाठी ने 25 जून को 'सत्य योग में शस्त्र और युद्ध रणनीति' पर व्याख्यान दिया। डॉ. विश्वंभर त्रिवेदी ने 'पतंजलि योग दर्शन' के बारे में 8 जून को सनातन धर्म लॉज में व्याख्यान दिया।

बन्धु एस.बी.आर. मिश्र ने 30 जून को जोगिया–सत्यदर्शन लॉज में एक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने 'आध्यात्म विज्ञान' के बारे में बताया।

इसके अलावा, बन्धु मिश्र ने 'मैं कौन हूँ' विषय पर एक व्याख्यान दिया जो 29 जून को गोरखनाथ ब्रह्म विद्या लॉज, देवरिया में आयोजित किया गया।

27 जून को जिगना–ब्रह्मविद्या लॉज में बन्धु वशिष्ठ मणि त्रिपाठी के व्याख्यान का विषय '24 गुरुओं की कथा' था।

21 जून को बांसगांव स्थित चतुर्भुज लॉज की बैठक में डॉ. सुधीर कुमार ने 'भगवद् गीता में कर्म योग' के बारे में चर्चा की।

जून माह में चौहान लॉज, कानपुर में निम्नलिखित पुस्तकों का ऑनलाइन अध्ययन किया गया– बन्धु एस.एस. गौतम द्वारा 1 से 13 जून तक 'ए टेक्स्टबुक ऑफ थिऑसफी' का अध्ययन संचालित किया गया।

'हिंदू प्रतीकवाद का परिचय' पुस्तक का अध्ययन क्रमशः बन्धु एस. एस. गौतम, बन्धु एस.के. पांडे, बन्धु शिखर अग्निहोत्री और बन्धु शिव बरन सिंह चौहान द्वारा 14 से 25 जून तक संचालित किया गया।

इसके बाद, बन्धु एस.एस. गौतम द्वारा 'चरित्र निर्माण' का अध्ययन 26 से 30 जून तक संचालित किया गया। जिस में, बन्धु गौतम को बन्धु शिव बरन सिंह चौहान और बहन चंद्रकांति देवी ने व्याख्यान देने में सहयोग किया।

नोएडा लॉज में 8 जून को विवेकचूड़ामणि पुस्तक का अध्ययन आयोजित किया गया। इसके बाद, 15 जून को 'लाइट ऑन द पाथ' पुस्तक में 'कर्म' विषय पर लेख का अध्ययन वहाँ आयोजित किया गया।

ग्रेटर नोएडा स्थित मैत्रेय लॉज की वार्षिक आम बैठक 8 जून को आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त, 15 जून को 'मैन एंड हिज बॉडीज' पुस्तक का सामूहिक अध्ययन वहाँ आयोजित किया गया।

बहन सुव्रलीना मोहंती ने क्रमशः 1, 8 और 22 जून को प्रयास लॉज, गाजियाबाद में 'लाइट ऑन द पाथ' पुस्तक का अध्ययन किया।

एनी बेसेंट लॉज, वाराणसी में द मोनाड पुस्तक का अध्ययन क्रमशः 10 और 12 जून को आयोजित किया गया।

जनसंवाद– बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 'मानव के आंतरिक शरीर की शुद्धि' विषय पर व्याख्यान दिया। यह 5 जून को इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स गोरखपुर केंद्र द्वारा मनाए गए 'विश्व पर्यावरण दिवस' की पूर्व संध्या पर आयोजित किया गया था। बन्धु मिश्रा का दूसरा व्याख्यान 'मैं कौन हूँ?' विषय पर 26 जून को सेवा स्पिरिचुअल लेडीज क्लब, गोरखपुर में आयोजित किया गया था।

भुवाली अध्ययन केंद्र में अध्ययन शिविर– 'महात्मा पत्रों की शिक्षाओं में अंतर्दृष्टि' विषय पर एक अध्ययन शिविर का निर्देशन बन्धु यू.एस. पांडे ने 7 से 11 जून तक भुवाली अध्ययन केंद्र में किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने प्रतिभागियों के लिए ध्यान सत्र भी आयोजित किए। फेडरेशन सचिव बन्धु एस. के. पांडे ने शिविर का प्रबंधन किया और नए सदस्यों के लिए 'बेसिक थियोसोफी' पर एक सत्र भी आयोजित किया।

अन्य फेडरेशनों में– बन्धु एस.एस. गौतम ने 21 जून को शंकर लॉज, दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'अदृश्य संसार और शरीर' विषय पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया।

बहन विभा सक्सेना ने मराठी संघ के तत्वावधान में 'लाइट ऑन द पाथ' पुस्तक का ऑनलाइन अध्ययन संचालित किया।

भारतीय सेक्शन कार्यक्रम– बन्धु यू.एस. पांडे ने 22 जून को एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का विषय 'द ड्वेलर ऑन द थ्रेसहोल्ड' था।

युवा शिविर– बहन सुव्रलीना मोहंती ने 3 से 8 जून तक बैंगलोर में आयोजित थिऑसफिकल युवा शिविर का संचालन किया।

टी.एस. फिलीपींस' बहन विभा सक्सेना ने क्रमशः 4 और 11 जून को 'भगवद् गीता' पुस्तक का ऑनलाइन अध्ययन कराया।

युवा भारतीय थिऑसफिस्ट

युवा भारतीय थियोसोफिस्टों का सम्मेलन 3 से 8 जून 2025 तक बैंगलोर सिटी लॉज में आयोजित किया गया। शिविर का विषय ''बीमारी से स्वास्थ्य'' था, जो विचारपूर्वक तैयार किए गए सत्रों और गतिविधियों की एक श्रृंखला के माध्यम से समग्र कल्याण को पोषित करने पर केंद्रित था। विभिन्न

क्षेत्रों से कुल 28 प्रतिभागी इस समृद्ध यात्रा में सम्मिलित हुए और गहन अध्ययन, आत्मचिंतन और सामूहिक सेवा में संलग्न हुए।

शिविर का उद्घाटन और शुभारंभ 4 जून को हुआ, जिसमें बन्धु वेंकटेश बाबू (केटीएफ और बैंगलोर सिटी लॉज के अध्यक्ष), बन्धु सनत कुमार जी (केटीएफ और बैंगलोर सिटी लॉज के उपाध्यक्ष), बन्धु एम एस श्रीधर जी (केटीएफ के सचिव) और बन्धु श्रीनिवास गुप्ता (बैंगलोर सिटी लॉज के सचिव) की उपस्थिति एक गरिमामयी उपस्थिति रही। तत्पश्चात, निम्नलिखित विषयों पर विचार प्रस्तुत किए गए–

बहन सुव्रलीना मोहंती ने 'जड़ें और बोध, आंतरिक यात्रा' पर बात की। बन्धु प्रदीप एम.एस. ने 'पतंजलि के अष्टांग' की व्याख्या की। बन्धु शिखर अग्निहोत्री के व्याख्यान का विषय 'बीमारी से स्वास्थ्य और साझाकरण का चक्र' था; और बहन मेरिके ने 'कला कार्यशाला' का संचालन किया।

सुबह का योग और गीता जप बन्धु अभिनव द्वारा संचालित किया गया। इसके अतिरिक्त, लॉज में 'मिस्टिक स्टार' का अनुष्ठान भी आयोजित किया गया।

संगोष्ठी प्रस्तुतियाँ– प्रतिभागियों ने 'आई प्रॉमिज' और 'एट द फीट ऑफ द मास्टर' जैसी पुस्तकों से अंतर्दृष्टि साझा की, जिसमें विवेक, निष्कामता, सदाचार और प्रेम जैसे मूल्यों पर विचार किया गया। 4 जून को बन्धु अभिनव कदंबी ने 'उज्ज्वल रूप' विषय पर चर्चा की, बन्धु तन्मयी मेलवंकी ने 'साहसी शब्द' पर वार्ता की। प्रांशी मोहंता ने 'आनंदमय विचार' की व्याख्या की, और क्लोवर वू ने 'किंगली एक्शन्स' पर व्याख्यान दिया।

5 जून को गुरु के चरणों में (भाग 1)– बन्धु आदित्य माथुर ने 'विवेक' पर व्याख्यान दिया और बन्धु शिवनेसन ने 'इच्छाशून्यता' विषय पर चर्चा की।

6 जून को गुरु के चरणों में (भाग 2)– स्मिताप्रज्ञान पात्रो का विषय 'सदाचार' था और बहन शरयू वागदेव ने 'प्रेम' पर व्याख्यान दिया।

सामुदायिक सेवा– 6 जून को एक सामूहिक परिसर सफाई और वृक्षारोपण गतिविधि का आयोजन किया गया, जिसमें पर्यावरण जागरूकता पर जोर दिया गया।

मैसूर भ्रमण– प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों का दौरा किया, जिससे भाईचारा और विरासत की सराहना बढ़ी।

शाम की गतिविधियाँ– दैनिक शाम के सत्रों में फ्लेयर समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम और इंटरैक्टिव खेल शामिल थे, जो आनंद और आपसी जुड़ाव को बढ़ावा देते थे।

यह सभा 'बीमारी से स्वास्थ्य' के मार्ग पर एक यादगार कदम सिद्ध हुआ, जिसमें आध्यात्मिक विकास और युवा जीवंतता का सम्मिश्रण था। सभी वक्ताओं, आयोजकों, स्वयंसेवकों और प्रतिभागियों को उनकी उत्साही और ईमानदार भागीदारी के लिए हार्दिक धन्यवाद।

150वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

सूचना

विषय– एक विश्व, एक जीवन– एक नई मानवता की भावना

थियोसोफिकल सोसाइटी के 150 वर्ष पूरे होने का उत्सव थियोसोफिकल सोसाइटी का 150वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, अड्यार में 31 दिसंबर 2025 से 4 जनवरी 2026 (प्रस्थान 5 जनवरी) तक आयोजित किया जाएगा। सोसाइटी के सभी सम्मानीय सदस्यों का प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए स्वागत है। गैर–सदस्य आवास के लिए पात्र नहीं हैं, किन्तु वे सम्मेलन और कैंटीन के भोजन के लिए पंजीकरण करा सकते हैं। पूरा कार्यक्रम थियोसोफिकल सोसाइटी अड्यार नामक यू ट्यूब चैनल पर बिना किसी शुल्क के लाइव देखा जा सकता है।

केवल सदस्यों के लिए आवास

लीडबीटर चैंबर्स (एलबीसी)– एलबीसी में दो बिस्तरों वाले कमरे हैं और प्रत्येक कमरे में एक संलग्न बाथरूम है। तीन लोगों के समूह के लिए कुछ बड़े कमरों में तीसरा बिस्तर जोड़ा जा सकता है। सौर वॉटर हीटर के माध्यम से गर्म पानी। सीमित संख्या।

न्यू क्वाड्रैंगिल (एन क्यू)– एनक्यू में दो बिस्तरों वाले कमरे हैं और प्रत्येक कमरे में एक संलग्न बाथरूम है। सौर वॉटर हीटर के माध्यम से गर्म पानी। सीमित संख्या।

बेसिक एकॉमोडेशन (बीए)– बुनियादी आवासों को अपग्रेड किया गया है, किन्तु आवासों की संख्या सीमित होगी, इसलिए पंजीकरण के लिए शीघ्र सम्बन्ध करें।

पैकेज दरें

(30 दिसंबर 2025 के रात्रिभोज से 5 जनवरी 2026 के दोपहर के भोजन तक प्रति व्यक्ति हैं। पैकेज की तिथियों के बाद किसी भी भोजन की व्यवस्था प्रतिनिधियों द्वारा स्वयं की जाएगी।)

स्थानीय प्रतिनिधि भोजन के लिये 'तत्काल अनुरोध' पर भोजन मिलनें की संभावना की जाँच के लिए भोजनशाला स्थित बीसीएल (बेंगलुरु सिटी लॉज) कार्यालय से (30 दिसंबर 2025 के बाद) संपर्क कर सकते हैं। किसी भी अनुरोध के लिए, पंजीकरण से पहले कृपया अधिवेशन अधिकारी के ईमेल पते पर सपर्क करें।

विदेशी प्रतिनिधि–

क. एलबीसी– यूएस डॉलर 420 – पंजीकरण शुल्क, आवास और एलबीसी में भोजन।

ख. एनक्यू– यूएस डॉलर 235 – पंजीकरण शुल्क, एनक्यू आवास और बीसीएल कैंटीन में भोजन।

ग. बीए– यूएस डॉलर 175 – पंजीकरण शुल्क, बुनियादी आवास और बीसीएल कैंटीन में भोजन।

घ. केवल पंजीकरण और भोजन– यूएस डॉलर 70 – केवल पंजीकरण और भोजन (आवास के बिना)।

भारतीय प्रतिनिधि–

च. एलबीसी– ₹17,500– पंजीकरण शुल्क, एलबीएस में आवास और भोजन।

छ. एनक्यू ₹6,500 – पंजीकरण शुल्क, एन क्यू में आवास और बीसीएल कैंटीन में भोजन।

ज. बीए ₹5,000 – पंजीकरण शुल्क, बीसीएल कैंटीन में बुनियादी आवास और भोजन।

झ. केवल पंजीकरण और भोजन ₹3,500 – बीसीएल कैंटीन में पंजीकरण और भोजन (आवास के बिना)।

ट. केवल पंजीकरण– ₹500 – (भोजन और आवास के बिना)।

भुगतान

विदेशी प्रतिनिधि– ऑनलाइन पंजीकरण और भुगतान करें।

यदि किसी कारण से आप ऑनलाइन रूप से भुगतान नहीं कर सकते हैं, तो कृपया अधिवेशन अधिकारी को लिखें और आपसे ''आगमन पर' भुगतान ले लिया जाएगा। फिर आप मास्टर–वीसा क्रेडिट कार्ड से लागू पैकेज दर का

भुगतान कर सकते हैं। कृपया अड्यार पहुँचने से पहले अपना यात्रा बीमा अवश्य करवा लें। नकद भुगतान स्वीकार नहीं किया जाएगा।

भारत से आने वाले प्रतिनिधि– ऑनलाइन पंजीकरण करें और भुगतान रुपये में करें

(क) पंजीकरण के साथ ऑनलाइन (अधिमान्य), या

(ख) थियोसोफिकल सोसाइटी के नाम देय बैंक ड्राफ्ट द्वारा, जो अधिवेशन अधिकारी, थियोसोफिकल सोसाइटी, अड्यार, चेन्नई 600020, भारत को कूरियर किया जाएगा। (व्हाट्स एप–. 91–884092628)। यह अनिवार्य है कि आप ऑनलाइन भुगतान प्रक्रिया पूरी करने के तुरंत बाद या बैंकड्राफ्ट भेजने के तुरंत बाद, निम्नलिखित का उल्लेख करते हुए, कन्वेन्शन अधिकारी <convention@ts-adyar.org> को भुगतान के बारे में एक ईमेल भेजें–

प्रतिनिधि– प्रतिनिधि का नाम, बैंक का नाम, भेजे जाने की तिथि और भेजनें की संदर्भ आईडी। ऐसे मामलों में पंजीकरण की तिथि– पुष्टि, चेक / ड्राफ्ट की प्राप्ति की तिथि होगी।

पंजीकरण प्रपत्र

आवास के साथ पंजीकरण करने की अंतिम तिथि 30 नवंबर 2025 है।

भुगतान के निर्देशों के साथ ऑनलाइन पंजीकरण कन्वेंशन की वेबसाइट <https://convention.ts-adyar.org/> पर उपलब्ध होगा (पंजीकरण 1 सितंबर 2025 भारतीय समयानुसार प्रातः 10 बजे; GMT+5-5 घंटे) पर प्रारम्भ होगा। यदि आवास भर जाते हैं, तो स्थिति की सूचना वेबसाइट पर दी जाएगी।

फॉर्म भरते समय, कृपया स्पष्ट रूप से बताएँ कि क्या आप किसी समूह / परिवार के सदस्य के रूप में या किसी विशेष भवन में रहना चाहते हैं आदि, ताकि हम आपके अनुरोधों को पूरा करने का प्रयास कर सकें, यदि वह स्थान पहले से किसी अन्य के द्वारा आरक्षित न हो। अंतिम समय में किए गए अनुरोधों पर विचार नहीं किया जाएगा।

जिन प्रतिनिधियों को आवास आवंटित किया गया है (या नहीं किया जा सकता है) उन्हें 15 दिसंबर 2025 तक ईमेल द्वारा सूचित किया जाएगा।

जिन प्रतिनिधियों को आवास आवंटित नहीं किया जा सका है, किन्तु उन्होंने भुगतान कर दिया है, उन्हें सम्मेलन के बाद उनका भुगतान वापस कर दिया जाएगा।

रद्दीकरण की अंतिम तिथि 10 दिसंबर 2025

जो प्रतिनिधि अपना पंजीकरण और आवास अनुरोध रद्द करना चाहते हैं, उनके लिए अंतिम तिथि 10 दिसंबर 2025 है।

इस तिथि के बाद, कोई राशि वापस नहीं की जाएगी। यदि रद्दीकरण अनुरोध 10 दिसंबर 2025 से पहले प्राप्त होता है, तो पैकेज राशि में से पंजीकरण शुल्क (500 रुपये या 70 अमेरिकी डॉलर) घटाकर सम्मेलन के बाद वापस कर दिया जाएगा।

सम्मेलन अधिकारी (सह–अधिवेशन अधिकारी)–

श्री शिखर अग्निहोत्री, ईमेल– <convention@ts-adyar.org>

पोस्ट– सम्मेलन अधिकारी, थिऑसफिकल सोसाइटी, अड्यार, चेन्नई 600 020, तमिलनाडु, भारत।

सम्मेलन वेबसाइट– https://convention.ts-adyar.org/

> अत्यंत मानवीय, मानवीय सीमाओं और कमियों के बावजूद, एच.एस. ऑल्कॉट एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने एक विश्व बंधुत्व का अद्भुत स्वप्न देखा। और उन्होंने न केवल इसका स्वप्न देखा, बल्कि इसकी प्राप्ति की नींव भी मजबूती से रखी। नैतिक मूल्यों की वह अवधारणा जो उनके मन में प्रबल थी वह ऐसी है जिसकी दुनिया भर के थिऑसफिस्टों को सदा आवश्यकता रहेगी, क्योंकि नैतिक जीवन व्यवहार में केवल गूढ़विद्या है।
>
> द थिऑसफिस्ट, अगस्त 1932, पृष्ठ 47